ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

खुशबु दीदी: मछली पालन से आत्मनिर्भरता की ओर
(पृष्ठ – 02)

इंदु देवी की सफलता की कहानी: संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक
(पृष्ठ – 03)

हर कठिनाई से निकलकर, रोशन होती है राह
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – फरवरी 2025 ।। अंक – 43

सतत् जीविकोपार्जन योजना: गरीबी उन्मूलन की ओर बिहार की नई उड़ान

बिहार सरकार, सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों के उत्थान हेतु नई दिशा में कदम बढ़ा रहा है। यह योजना न केवल अत्यंत निर्धन परिवारों को रोजगार के अवसर प्रदान कर रही है, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में भी मदद कर रही है।

योजना का उद्देश्य और लक्ष्य

सतत् जीविकोपार्जन योजना का उद्देश्य अत्यंत निर्धन और भूमिहीन परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त करना है। इस योजना के तहत लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, ताकि वे अपने रूचि एवं योग्यता के अनुरूप छोटे व्यवसाय या स्वरोजगार के माध्यम से एक स्थायी आय स्रोत विकसित कर सकें। सरकार का लक्ष्य है कि इस योजना के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों को मुख्यधारा में लाया जाए।

उपलब्धियां

आर्थिक सहायता में वृद्धि

सरकार ने अत्यंत निर्धन परिवारों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता की राशि को 1 लाख से बढ़ाकर दो लाख रुपये कर दिया गया। इससे अत्यंत निर्धन परिवारों को अपने व्यवसाय शुरू करने और उसे बढ़ाने में बड़ी मदद मिल रही है। इस पहल का उद्देश्य राज्य में स्वरोजगार को बढ़ावा देना है।

महिला सशक्तिकरण

जीविका संपोषित ग्राम संगठनों के माध्यम से हजारों महिलाएँ सतत् जीविकोपार्जन योजना का लाभ उठा रही हैं। महिलाएँ स्वरोजगार के जरिए न केवल अपनी रोजगार को सुधार रही हैं, बल्कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत कर रही हैं। बिहार के विभिन्न जिलों में महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे छोटे व्यवसाय इस योजना की सफलता का उदाहरण हैं।

शहरी गरीबों को लाभ

पहली बार, योजना का लाभ शहरी क्षेत्रों की निर्धन परिवारों तक पहुंचाया गया है। शहरी निर्धन परिवारों की पहचान कर उन्हें रोजगार के साधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यह पहल शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटने का काम कर रही है।

अंतरराष्ट्रीय मान्यता

बिहार सरकार द्वारा क्रियान्वित इस योजना को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिली है। विभिन्न देशो से प्रतिनिधियों द्वारा योजना के कार्यान्वयन का निरीक्षण एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया और इसे गरीबी उन्मूलन के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बताया।

योजना का प्रभाव

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने अब तक लाखों परिवारों की जिंदगी बदली है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि लाभार्थी अब अपने व्यवसाय के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रहे हैं। चाहे वह कृषि आधारित व्यवसाय हो, हस्तशिल्प हो, या छोटे स्तर का उद्योग, यह योजना हर क्षेत्र में गरीबों को एक नई पहचान दे रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार के अत्यंत निर्धन परिवारों के लिए एक वरदान साबित हो रही है। इसने न केवल आर्थिक असमानता को कम किया है, बल्कि समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का काम भी किया है। इस योजना की सफलता यह सिद्ध करती है कि जब सही नीति और समर्पण के साथ योजनाओं को लागू किया जाता है, तो गरीबी को मिटाना असंभव नहीं है। बिहार अब गरीबी से समृद्धि की ओर बढ़ रहा है और सतत् जीविकोपार्जन योजना इस यात्रा में एक मजबूत स्तंभ बनकर उभर रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने रीमा दीदी को बनाया आत्मनिर्भर

खगड़िया जिला के परबत्ता प्रखंड के भरसो पंचायत की रहने वाली रीमा दीदी, एक समय अपने परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रही थीं। उनके पति महेश्वर सहनी मजदूरी करते थे। सीमित आय के कारण परिवार का गुजारा मुश्किल से हो पाता था। उनके परिवार के पास ना तो एक पक्का घर था और ना ही कोई स्थायी आय का साधन था। इस कठिन स्थिति में सतत् जीविकोपार्जन योजना उनके जीवन में एक बड़ा बदलाव लेकर आई।

रीमा दीदी का जीवन बदलने की शुरुआत तब हुई जब उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। कुशल जीविका महिला ग्राम संगठन ने उन्हें प्रोत्साहित किया और किराने की दुकान खोलने के लिए सहायता प्रदान की। इस पहल ने उन्हें आत्मनिर्भर बनने का मौका दिया।

रीमा दीदी ने अपनी मेहनत और लगन से किराने की दुकान शुरू की, जो उनके परिवार के लिए आय का स्थायी स्रोत बन गई। उनके पति और बेटे भी इस काम में उनका साथ देते हैं। साथ ही, उन्होंने अगरबत्ती निर्माण का कार्य भी शुरू किया। ग्राम संगठन और जीविका की सहायता से उन्हें यह काम सीखने और आगे बढ़ाने में मदद मिली। यह अतिरिक्त आय उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को स्थिर करने में सहायक साबित हुआ।

आज रीमा दीदी का परिवार अपनी जरूरतों को आसानी से पूरा कर पा रहा है। उनका आत्मविश्वास बढ़ा है, और वह अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने की योजना बना रही हैं। उनकी यह यात्रा अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा है कि सही मार्गदर्शन और मेहनत से जीवन में बदलाव लाया जा सकता है।

खुशबु दीदी: मछली पालन से आत्मनिर्भरता की ओर

खुशबु दीदी, मुंगेर जिला के तारापुर प्रखंड के धोबई पंचायत के रनगॉव की रहने वाली है। खुशबु दीदी एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखती हैं। उनके पति गुड्डु चौधरी पहले ताड़ी और देशी शराब का कारोबार करते थे, जिससे परिवार का भरण–पोषण होता था। लेकिन बिहार सरकार द्वारा शराबबंदी लागू होने के बाद उनका रोजगार बंद हो गया, और उन्हें मजदूरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई जिसके कारण और दो वक्त की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो गया।

वर्ष 2018 में बिहार सरकार द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य शराब एवं ताड़ी व्यवसाय से जुड़े परिवारों और अन्य निर्धन परिवारों को रोजगार के अवसर प्रदान करना था। योजना के तहत खुशबु दीदी का चयन किया गया और उन्हें क्षमतावर्धन एवं व्यवसाय संचालन के बारे में तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने मछली पालन को अपना जीविकोपार्जन का साधन बनाने की इच्छा जताई। ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें प्रारंभिक निवेश निधि से 10,000 रुपये दिए गए, जिससे उन्होंने मछली खरीदकर बेचना शुरू किया। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि से 20,000 रुपये की सहायता मिली, जिससे उन्होंने एक पोखर लीज पर लेकर मछली पालन शुरू किया। दूसरी किस्त मिलने के बाद उन्होंने एक और बड़ा पोखर लीज ली। उत्पादित मछली को बेचने के लिए उनके पति ने पास में एक दुकान लेकर मछली बेचना शुरू किए।

आज खुशबु दीदी को 'मछली वाली दीदी' के नाम से जाना जाता है। उनकी मासिक आय लगभग 25,000 रुपये हो गई है और उनकी संपत्ति एक लाख रुपये तक पहुंच गई है। इसके अलावा, वह मुर्गी पालन और बकरी पालन भी कर रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर खुशबु दीदी न केवल आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि अपने परिवार को भी एक बेहतर जीवन दे रही हैं।

फुल कुँवर: सतत् जीविकोपार्जन योजना से आत्मनिर्भरता की ओर

फुल कुँवर औरंगाबाद जिला के हसपुरा प्रखंड के ताल पंचायत की रहने वाली है। फुल कुँवर अपने गाँव में सफलता की मिसाल बन चुकी हैं। कड़ी मेहनत और साहस के दम पर उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया और अपने परिवार का भरण–पोषण बेहतर तरीके से कर रही हैं। उनके पति गाँव में ही दैनिक मजदूरी करते थे, लेकिन मजदूरी से हुई आमदनी को शराब में बर्बाद कर देते थे। अधिक शराब पीने के कारण उनका लीवर खराब हो गया और अंततः उनका देहांत हो गया। अचानक आई इस विपदा ने फुल कुँवर को झकझोर दिया। पाँच बेटियों और दो बेटों की जिम्मेदारी अकेले उनके कंधों पर आ गई। परिवार की स्थिति दयनीय होती चली गई, क्योंकि कोई भी उनकी मदद करने को तैयार नहीं था।

उनकी कठिनाइयों को देखते हुए 13 अक्टूबर 2019 को सामुदायिक संसाधन सेवी के माध्यम से फुल कुँवर को सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में चयनित किया गया। योजना के तहत उन्हें किराना दुकान खोलने के लिए आर्थिक सहायता दी गई। इस सहयोग से उन्होंने अपने गांव में एक छोटी किराना दुकान शुरू की और कड़ी मेहनत से इसका संचालन करने लगी। दुकान में भी पकौड़ा और अंडा भी बेचना शुरू किया, जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हुई। एक साल बाद उन्होंने बकरी पालन का कार्य भी शुरू किया और अभी उनके पास दस बकरियाँ हैं।

आज फुल कुँवर अपने परिवार का पालन–पोषण अच्छे से कर रही हैं। व्यवसाय से होने वाली आमदनी से उन्होंने अपनी तीन बेटियों की शादी अच्छे परिवार में की और चार बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवा रही हैं।

अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहती हैं कि अगर सतत् जीविकोपार्जन योजना नहीं होती, तो शायद उनका और उनके परिवार का भविष्य अंधकारमय रहता।

इंदु देवी की सफलता की कहानी: संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक

इंदु देवी मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज प्रखंड के रामपुर असली गाँव की रहने वाली है। इंदु देवी का जीवन पहले संघर्षों से भरा था। वर्ष 2014 में इंदु देवी की शादी अर्जुन शर्मा से हुई थी। शुरुआती तीन साल तक उनका परिवार सुखमय था। लेकिन इसके बाद इंदु के पति के साथ एक हादसा हो गया जिससे उनका शरीर पूरी तरह से कमजोर हो गया। इस दुर्घटना ने इंदु की जिंदगी में कई समस्याएँ खड़ी कर दीं। घर चलाना और बच्चों का पालन–पोषण एक मुश्किल काम बन गया। जिसके कारण इंदु को दूसरों के घरों में काम करना पड़ता था। पति का इलाज भी स्वयं कराना पड़ता था। दैनिक सजदूरी से इंदु को महीने में केवल 3000 से 3500 रुपये ही मिलते थे, जिससे वह मुश्किल से घर का खर्च चला पाती थी।

वर्ष 2022 में सरस जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा इंदु देवी को चयनित किया गया और उन्होंने बकरी पालन का कार्य शुरू किया। उन्हें बकरी पालन के लिए प्रशिक्षण और अन्य सहायता प्रदान की गयी। इंदु देवी को विशेष निवेश निधि की 10000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि की 16000 रुपये की बकरी और जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि की 7000 रुपये की राशि प्राप्त हुई। इसके बाद, उन्होंने किराना दुकान भी खोल ली, जिससे उनकी मासिक आय 8500 रुपये हो गई। वर्तमान में उनके पास 71000 रुपये की परिसंपत्ति है।

इंदु देवी बकरी पालन और दुकान को और बड़ा करने की योजना बनायी है। इसके अलावा वह अपने पति के लिए एक रिक्शा खरीदना चाहती हैं ताकि वह कुछ काम कर सकें। साथ ही, इंदु का सपना है कि अपने बच्चों को कॉलेज तक पढ़ाई कराया जाय।

हर कठिनाई से निकलकर, रोशन होती है राह

नालन्दा जिला के हरनौत प्रखंड के चौरिया गाँव में रहने वाली पानों देवी का जीवन संघर्ष और आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी है। पानों देवी अपने दो बच्चों के साथ जीवन यापन करने के लिए आज एक किराना और मनिहारी की दुकान चला रही हैं। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से अपने जीवन को नया दिशा दी है। आज वह हर महीने 7–8 हज़ार रुपये कमा रही हैं जिससे उनके परिवार का भरण–पोषण हो रहा है।।

पुर्व में पानों देवी का जीवन अत्यंत कठिनाइयों में गुजरा था। उनके पति दैनिक मजदूरी करते थे जिससे उनके परिवार का गुजारा किसी तरह हो जाता था। पानों देवी के पति को शराब की लत थी, जिससे उनका स्वास्थ्य दिन–ब–दिन बिगड़ता जा रहा था। वर्ष 2021 में कोविड महामारी के दौरान उनकी हालत और खराब हो गई और अंतत : उनका निधन हो गया। पति के निधन के बाद पानों देवी के ऊपर अपने चार बच्चों की देखभाल की पूरी जिम्मेदारी आ गई।

संसार की इस कठिन स्थिति में पानों देवी के पास आय का कोई स्थायी साधन नहीं था। उनके पास खेती–बाड़ी के लिए ज़मीन भी नहीं थी, जिससे वह कुछ कमा पाती। इस स्थिति में उन्हें दूसरों के खेतों में काम करना पड़ा, लेकिन यह आय बहुत सीमित थी। अपने बच्चों के भरण–पोषण के लिए पानों देवी ने यह काम किया, लेकिन फिर भी हर दिन गुजारा मुश्किल था।

वर्ष 2021 में, उनकी कठिनाइयों को देखते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उनका चयन किया गया। योजना के तहत उन्हें व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पानों देवी को 20,000 रुपये का किराना और मनिहारी की परिसंपति प्रदान किया गया।

पहले दुकान खोलने के बाद, पानों देवी को बहुत मुश्किलें आईं। उनकी दुकान एक टूटे–फूटे घर के कोने में थी, जहाँ ग्राहकों को पहुँचने में मुश्किलें होती थीं। पहले कुछ महीने में कमाई भी बहुत कम थी लेकिन जीविका कर्मियों द्वारा उन्हें निरंतर सहायता दी और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

कुछ समय बाद, पानों देवी ने गाँव के एक अन्य घर में किराए पर एक कमरा लिया और वहाँ अपनी दुकान शुरू की। अब दुकान एक मुख्य गली में थी, जहाँ ग्राहक आसानी से आ सकते थे। धीरे–धीरे, उनकी दुकान पर ग्राहक आने लगे और पानों देवी को थोड़ी–थोड़ी कमाई होने लगी। इस आय ने उन्हें उत्साहित किया और उन्हें लगा कि अब वह अपनी मेहनत से कुछ बेहतर कर सकती हैं।

वर्ष 2022 में पानों देवी ने अपने दोनों बेटों को दिल्ली भेज दिया, ताकि वे वहाँ काम सीखकर अपना खर्च उठा सकें। यह निर्णय उनके लिए बेहद कठिन था, क्योंकि एक माँ का दिल अपने बच्चों से दूर रहने के लिए राजी नहीं था, लेकिन परिवार की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए यह कदम उठाना जरूरी था।

अब पानों देवी की दुकान अच्छी स्थिति में आ चुकी है और वह महीने में 5 से 6 हज़ार रुपये कमा रही हैं। वह अपने सामान को थोक भाव में खरीदने के लिए पटना जाती हैं। पानों देवी का सपना है कि वह अपने बच्चों को वापस बुलाकर उन्हें अच्छी शिक्षा दिलवाए और उन्हें आत्मनिर्भर बनाए।

पानों देवी की कहानी यह दर्शाती है कि अगर मेहनत, दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन मिले तो कोई भी महिला अपनी स्थिति बदल सकती है। उनके संघर्ष ने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से मजबूत बनाया बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार